हिंदी चिट्ठाकारिता : इंटरनेट पर हिंदी की नई संभावना

■ राकेश शर्मा

इंटरनेट : अभिव्यक्ति का आधुनिक पैरोकार

इंटरनेट, समकालीन अग्रगामी मानवता का समष्टिगत, व्यक्त मानस पटल है । मानव अभिव्यक्ति का यह एक ऐसा विराट, अनंत और जीवंत सागर है जिसमें विचारों, भावनाओं और सूचनाओं की निरंतर चतुर्दिक तरंगें और लहरें उठती रहती हैं । प्रकृति ने मनुष्य को अभिव्यक्ति की जो बेचैनी और क्षमता नैसर्गिक रूप से प्रदान की थी, वह समकालीन लोकतांत्रिक चेतना के दौर में मौलिक मानवाधिकार के रूप में व्यापक स्वीकृति का संबल पाने और वेब तकनीक के जनसुलभ होने के बाद मानवता के इतिहास में पहली बार व्यापक और निर्बाध रूप से प्रस्फुटित हो रही है । यह एक ऐसी विशाल आकाशगंगा के समान है जिसमे ज्ञान और सूचना का अनंत भंडार समाये हुए है । कंप्युटर और फिर इंटरनेट आने के बाद मानव जीवन से जुड़े सभी पहलुओं में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है । ऐसे में हिंदी भाषा और साहित्य इससे कैसे अछूता रह सकता है । अंतर्जाल पर हिंदी अब अपने वैश्विक काल पर प्रवेश कर चुकी है ।

एक सर्वेक्षण के मुताबिक दुनिया की 660 करोड़ आबादी में से 126 करोड़ से अधिक लोग अब इंटरनेट का प्रयोग करने लगे हैं, जिनमें से केवल 3.6 फीसदी भारतीय हैं । छः करोड़ इंटरनेट प्रयोक्ताओं के साथ भारत अब दुनिया का पाँचवां सर्वाधिक ऑनलाइन आबादी वाला देश बन गया है। हमारे देश की केवल 5.3 फीसद आबादी अब तक इंटरनेट से जुड़ पायी है । दुनिया के लगभग 30 करोड़ ब्रॉडबैंड इंटरनेट धारकों में केवल 0.2 फीसद यानी 21 लाख भारतीयों के पास ही ब्रॉडबैंड कनेक्शन है । परंतु यह गौरतलब है कि भारत में नेट उपभोक्ताओं की विकास दर चीन के बाद विश्व में दूसरी है ।

ऑनलाइन जगत में हिन्दी

हिन्दी दुनिया की तीसरी सर्वाधिक बोली–समझी जाने वाली भाषा है। विश्व में लगभग 80 करोड़ लोग हिन्दी समझते हैं, 50 करोड़ लोग हिन्दी बोलते हैं और लगभग 35 करोड़ लोग हिन्दी लिख सकते हैं। लेकिन इंटरनेट पर हिन्दी अभी भी काफी पिछड़ी अवस्था में है। ग्लोबल रीच द्वारा सितम्बर, 2004 में जारी भाषा पर आधारित विश्व की ऑनलाइन आबादी के आँकड़ों में शामिल 34 भाषाओं की सूची में हिन्दी को स्थान भी नहीं दिया गया था। तेजी से विकसित हो रही गैर–अंग्रेजी ऑनलाइन भाषाओं में चीनी, जापानी, स्पेनिश, जर्मन, कोरियन, फ्रेंच, इटालियन, डच और पुर्तगाली प्रमुख हैं, जबकि हिन्दी अन्य गैर–अंग्रेजी ऑनलाइन भाषाओं में शामिल है। ऑनलाइन जगत में हिन्दी के पिछड़ने का प्रमुख कारण यह है कि इंटरनेट से जुड़े भारतीय अपने ऑनलाइन कामकाज में अंग्रेजी का प्रयोग करते रहे हैं और एक ऐसा मिथक सा बन गया है कि अंग्रेज़ी जाने बिना कंप्युटर पर काम ही नहीं हो सकता । हालाँकि भारत में इंटरनेट से जुड़े लोगों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है और इंटरनेट विश्व सांख्यिकी के ताजा आँकड़े बताते हैं कि भारत में जून, 2006 तक 5 करोड़ 60 लाख इंटरनेट प्रयोक्ता हो चुके हैं और भारत अब अमरीका, चीन और जापान के बाद इंटरनेट से जुड़ी आबादी के मामले में चौथा स्थान हासिल कर चुका है। ब्रॉडबैंड इंटरनेट कनेक्शनों की संख्या भारत में 15 लाख हो चुकी है। भारत में अब हर दो कंप्यूटर प्रयोक्ताओं में से एक इंटरनेट से जुड़ चुका है। इंटरनेट का प्रयोग बढ़ने के साथ–साथ ऑनलाइन हिन्दी की स्थिति भी बेहतर हो रही है। इंटरनेट पर हिन्दी के जालस्थलों और चिट्ठों की संख्या तेजी से बढ़ रही है और जक्स्ट कंसल्ट द्वारा जुलाई, 2006 में जारी ऑनलाइन

इंडिया के आँकड़ों से पता चलता है कि ऑनलाइन भारतीयों में से 60% अंग्रेजी पाठकों की तुलना में 42% पाठक गैर–अंग्रेजी भारतीय भाषाओं में और 17% पाठक हिन्दी में पढ़ना पसंद करते हैं। हालाँकि पाठकों का यह रुझान ज्यादातर जागरण, बी.बी.सी. हिन्दी और वेबदुनिया जैसे लोकप्रिय हिन्दी वेबसाइटों की तरफ ही है, जिन्हें रोजाना लाखों हिट्स मिलते हैं।

हिंदी ब्लागिंग या चिट्ठाकारी का संक्षिप्त इतिहास

इंटरनेट पर ब्लॉग नामक अवतार की परिकल्पना सर्वप्रथम वेबब्लॉग नाम से आज से तेरह वर्ष पूर्व जॉर्न बर्गर द्वारा सन् 1997 में की गई और इसी शब्द को हँसी–मज़ाक में छोटा करके पीटर मरहॉल्ज ने सन् 1999 में ब्लॉग शब्द का प्रयोग शुरू कर दिया और तब से संज्ञा और क्रिया दोनों ही रूपों में इसका प्रयोग किया जाने लगा । 21 अप्रैल 2003 हिंदी चिट्ठाकारी के लिए ऐतिहासिक दिन था । लगभग एक दर्जन से अधिक सक्रिय ब्लॉग्स और वेबसाइट्स इस बात की पुष्टि करते हैं और आलोक कुमार के 9–2–11(नौ–दो–ग्यारह) को हिंदी का सबसे पहला चिट्ठा का दर्जा देते हैं । 21 अप्रैल 2003 को अपने पहले ब्लॉग–पोस्ट में आलोक लिखते हैं:

चलिये अब ब्लॉग बना लिया है तो कुछ लिखा भी जाए इसमें । वैसे ब्लॉग की हिन्दी क्या होगी? पता नहीं । पर जब तक पता नहीं है तब तक ब्लॉग ही रखते हैं, पैदा होने के कुछ समय बाद ही नामकरण होता है न । पिछले 3 दिनों से इंस्क्रिप्ट में लिख रहा हूँ, अच्छी खासी हालत हो गई है उँगलियों की और उससे भी ज़्यादा दिमाग की । अपने बच्चों को तो पैदा होते ही इंस्क्रिप्ट पर लगा दूँगा, वैसे पता नहीं उस समय किस चीज़ का चलन होगा ... इस प्रकार हिन्दी भाषा के प्रथम चिट्ठाकार के रूप में आलोक कुमार का नाम इतिहास में दर्ज हो गया । उनका चिट्ठा नौ दौ ग्यारह हिन्दी का अब तक का प्रथम ज्ञात हिन्दी चिट्ठा है। आरम्भ में हिन्दी टाइपिंग की जटिलताओं के चलते काफी कम लोग कंप्युटर पर हिन्दी में लिखते थे । धीरे–धीरे हिन्दी चिट्ठों की सँख्या बढ़ने लगी। सन 2007 से हिन्दी चिट्ठों की सँख्या अप्रत्याशित रुप से बढ़ी। इसका कारण विविध ब्लॉगिंग सेवाओं में इण्डिक यूनिकोड का समर्थन आना, नए हिन्दी टाइपिंग औजारों का आना, जैसे ब्लॉगर में ट्राँसलिट्रेशन टूल का आना एवं विविध मीडिया माध्यमों में हिन्दी चिट्ठाकारी का प्रचार भी रहा । वर्तमान में सक्रिय–निष्क्रिय मिलाकर लगभग 12,000 के करीब हिन्दी चिट्ठे हैं और दिनोंदिन इनकी संख्या में इजाफ़ा हो रहा है । आरम्भ में अधिकतर हिन्दी चिट्ठे व्यक्तिगत प्रकृति के थे एवं विषय आधारित चिट्ठे नहीं थे अथवा नगण्य थे । सन 2007 से हिन्दी चिट्ठों की सँख्या में अप्रत्याशित बढ़ोतरी हुई एवं सिनेमा, तकनीक, विज्ञान आदि विविध विषयों पर अनेकों चिट्ठों का उदय हुआ ।

निजी डायरी लेखन से अलग हटकर ब्लॉग सार्वजनिक हित का माध्यम बने यह हिन्दी ब्लागिंग की सबसे बड़ी जरूरत है और काम भी । इसके सामाजिक और आर्थिक कारण हैं । आज भारत में अविकसित भूमंडलीकरण का दौर है । ऐसे में ब्लागिंग एक सशक्त माध्यम बन सकता है । भारत में इंटरनेट उपयोक्ताओं पर जक्ट्आलो कंसल्टभ नामक एक कंपनी द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार कुल इंटरनेट प्रयोगकर्ताओं में से 44 प्रतिशत ने हिंदी वेवसाइटों के प्रति उत्साह जताया जबकि 25 प्रतिशत उपयोक्ता अन्य भारतीय भाषाओं में इंटरनेट पर काम–काज़ के प्रति उत्सुक दिखे । अंग्रेज़ी को विश्वव्यापीजाल का पर्याय मान चुके लोगों के लिए सचमुच यह आंख खोलने वाला अध्ययन है । वाकई आज हिंदी में लगभग 12 हज़ार से ज़्यादा ब्लॉसग्सि, 1 हज़ार से ज़्यादा वेबसाइटें तथा 50 हज़ार से ज़्यादा विकिपृष्ठ हैं, और 12 लाख से ज़्यादा पन्ने इंटरनेट पर लिखे जा चुके हैं ।

हिन्दी चिट्ठाकारी की स्थिति

चिट्ठाकारी (ब्लॉगिंग) भारत में तेजी से लोकप्रिय हो रही है और 85% भारतीय नेटिजन नियमित रूप से ब्लॉग पढ़ते हैं। किंतु हिन्दी चिट्ठों का संसार अभी उतना व्यापक नहीं हो पाया है। चिट्ठा विश्व के मुताबिक भारतीय चिट्ठों में अब तक केवल 7% ही हिन्दी में हैं। हिन्दी चिट्ठों की संख्या फिलहाल लगभग 400 है जिनमें से नारद के माध्यम से 326 चिट्ठों की ख़बर मिलती रहती है। लोकप्रिय माने जाने वाले हिन्दी चिट्ठों पर प्रकाशित किसी नई प्रविष्टि को औसतन सौ हिट्स मिलते हैं और उनको मिलने वाली प्रतिक्रियाओं की संख्या शायद ही कभी 30 से ऊपर जा पाती है। हिन्दी चिट्ठों के ज्यादातर पाठक अभी तक वे चिट्ठाकार हैं जो नारद और चिट्ठा विश्व जैसे हिन्दी चिट्ठा संकलकों के माध्यम से अन्य चिट्ठाकारों के विचारों से रूबरू होते रहते हैं। सर्च इंजन अथवा अन्य माध्यमों से स्वतंत्र रूप से हिन्दी चिट्ठों तक पहुँचने वाले नये पाठकों की संख्या बहुत कम ही है। फिर भी, अच्छी बात यह है कि शुरुआती दौर में ही हिन्दी चिट्ठों का दायरा विश्व पटल के काफी बड़े हिस्से में फैल चुका है। हिन्दी के चिट्ठाकार मुख्य रूप से भारत के अलावा संयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा,

जर्मनी, इटली, फ्रांस, स्वीटजरलैंड, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, रूस, सिंगापुर, कुवैत, संयुक्त राज्य अमीरात और फिलीपींस आदि देशों में सक्रिय हैं। भारत के ज्यादातर राज्यों में हिन्दी चिट्ठाकारों की मौजूदगी देखी जा सकती है जिसमें हिन्दी भाषी राज्यों के अलावा दक्षिण और पश्चिम भारत के राज्यों में उनकी सक्रियता विशेष रूप से उल्लेखनीय है। विश्व में हिन्दी भाषियों की विशाल संख्या और इंटरनेट पर हिन्दी के निरंतर बढ़ रहे प्रयोग को देखते हुए हिन्दी चिट्ठाकारिता का भविष्य अत्यंत उज्वल दिखता है, हालाँकि हिन्दी चिट्ठे अब तक ऑनलाइन हिन्दी पाठकों के बहुत बड़े वर्ग तक नहीं पहुँच पाए हैं। लेकिन हिन्दी चिट्ठाकारिता का सबल पक्ष है कलम के धनी और तकनीकी रूप से कुशल प्रतिभाशाली चिट्ठाकारों का इससे जुड़ा होना। लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है स्वदेश भारत और स्वभाषा हिन्दी के प्रति सबका अनन्य प्रेम, जो उन्हें एकसूत्र में बाँधता है और इंटरनेट पर हिन्दी को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के लिए निरंतर सचेष्ट रहने हेतु प्रेरित भी करता है। हिन्दी चिट्ठाकारों द्वारा शुरू किए गए अक्षरग्राम, नारद, सर्वज्ञ, निरंतर, परिचिर्चा, शून्य, ब्लॉगनाद, बुनो कहानी और अनुगूँज जैसे उल्लेखनीय सहकारी प्रयासों से हिन्दी चिट्ठाकारिता के प्रखर भविष्य के प्रति आशा बलवती होती है। भारत और दुनिया के विभिन्न शहरों में हिन्दी चिट्ठाकारों के अक्सर होते रहने वाले सम्मेलन उनकी सजगता और सक्रियता को बढ़ाते हैं ।

नुक्तामचीनी , देवनागरी , रचनाकार , ई स्वामी , फुरसतिया तथा प्रतिभास जैसे चिट्ठे और आलोक कुमार, देवाशीष चक्रवर्ती, रवि रतलामी, अनुनाद सिंह, जीतू , जैसे चिट्ठाकारों ने ब्लॉग को लोकप्रिय बनाने में ऐतिहासिक भूमिका अदा की । मज़ेदार बात ये है कि इनमें से कोई भी खांटी हिंदीवाला नहीं है या यों कहें कि वे हिंदी कर–धर कर नहीं कमाते–खाते हैं । हां, वे हिन्दी–प्रेमी और हिंदी के प्रति समर्पित हैं, और प्रकारांतर में उनमें से ज़्यादातर ने शुरू–शुरू में शौकिया लिखना शुरू किया और आज कुछेक को छोड़कर सारे परिपक्व ब्लाग लेखक बन चुके हैं ।

हिंदी चिट्ठाकारिता के पिछड़ने के कारण :

अग्रेज़ी ब्लाग के मुकाबले हिंदी चिट्ठाकारी अपेक्षित प्रगति नहीं कर पाई है । इसके लिए अनेक कारण गिनाए जा सकते हैं । उनमें से कुछ इस प्रकार हैं

हिन्दी चिट्ठाकारी के बारे में इंटरनेट से जुड़े ज्यादातर हिन्दी भाषी व्यक्तियों को जानकारी नहीं है ।

ऑनलाइन पाठकों को हिन्दी चिट्ठों की तरफ आकर्षित करने के लिए जनसंचार माध्यमों का प्रभावी उपयोग नहीं हो पाया है ।

हिन्दी चिट्ठों पर लिखे जा रहे विषयों में विविधता, उत्कृष्टता और पठनीयता के विकास की बहुत

	Language		Visits
1.	en-us		47,867
2.	en		1,584
3.	en-gb		325
4.	de		181
5.	fr	French	120
6.	ne-np		97
7.	nl		74
8.	ru	Russian	70
9.	it	Italian	66
10.	hi	हिंदी	62

एक सर्वेक्षण के मुताबिक आनलाईन जगत की दस प्रमुख भाषाओं में हिंदी भी शामिल

जरूरत है, जिसके अभाव में बड़ी संख्या में ऑनलाइन पाठक वर्ग चिट्ठों की तरफ आकर्षित नहीं हो पा रहे हैं । स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, आय संवर्धन, क़ानून, तकनीक, पर्यावरण, नारी मन, साहित्य, खेल, फिल्म, क ला, चित्रकारी और फोटोग्राफी, संगीत, फिल्म, कृषि, स्वरोजगार के उद्यम, राजनीति, अर्थनीति, मीडिया विश्लेषण, समाज, संस्कृति,योग, अध्यात्म, दर्शन, ज्योतिष जैसे तमाम विषयों पर विशेषज्ञों और पाठकों के बीच घनिष्ठ संवाद पर आधारित चिट्ठे सामने आनेचाहिए।

हिन्दी यूनिकोड फोण्ट और कंप्यूटर पर हिन्दी टंकण के सरल औजारों की जानकारी लोगों के पास नहीं है और हिंदीभाषी अभी भी कंप्युटर पर हिंदी टंकण को टेढ़ी खीर मानते हैं ।

चिट्ठाकारी में लगने वाले समय, श्रम और व्यय के एवज में कोई कमाई नहीं होने के कारण बहुत–से प्रतिभावान साथी चिट्ठाकारी में सक्रिय दिलचस्पी बनाए नहीं रख पाते । स्वांत:सुखाय प्रवृत्ति से अच्छा लिख सकने की क्षमता वाले कई चिट्ठाकार भी टिप्पणियों के रूप में पाठकों की जीवंत प्रतिक्रिया अपेक्षा के अनुरूप नहीं मिल पाने के कारण धीरे–धीरे उदासीन हो जाते हैं।

शिक्षित हिन्दी भाषियों के बहुत बड़े वर्ग की पहुँच से कंप्यूटर और इंटरनेट अब भी दूर हैं।

क्या हिन्दी ब्लागिगं से कमाई की उम्मीद है ?

नेट में कमाई मुख्य रूप से 'पे पर क्लिक', 'एफिलियेट प्रोग्राम' और 'स्वयं के प्रोडक्ट बेचने' से होती है पर दुर्भाग्य से अभी तक हिन्दी के लिये ये चीजें विकसित नहीं हो पाई हैं। गुगल का एडसेंस भी अंग्रेज़ी के लोकप्रिय ब्लाग्स को ही पैसे दिला पा रहा है इसकी बड़ी बजह हिंदी ब्लाग्स पर कम हिट्स का आना । क्लिकबैंक.कॉम के डिजिटल प्रोडक्ट्स बेचने से अच्छी खासी कमाई होती है किन्तु हिन्दी का प्रयोग करके हम क्लिकबैंक के डिजिटल प्रोडक्ट्स बेच नही सकते। 'एड्स फॉर इंडियन्स' नाम का एक नेटवर्क है किन्तु मैं उसके विषय में कोई उत्साहजन अनुभव अभी तक सामने नहीं आए हैं । हाँ, भारत के लिये डीजीएमप्रो.कॉम एक एफिलियेट नेटवर्क है जिससे कुछ कमाई की सम्भावना दिखाई पड़ती है। यदि हम अपने वेबसाइट या ब्लॉग के माध्यम से एयर बुकिंग, होटल बुकिंग, आनलाइन शॉपिंग करवा पायें तो डीजीएमप्रो से अवश्य ही कमाई हो सकती है । किन्तु अभी हमारे देश में आनलाइन बुकिंग और शॉपिंग का चलन बहुत कम है इसलिये यहां कमाई बहुत ही कम है। पर धीरे धीरे यह चलन बढ़ते जा रहा है इससे उम्मीद बढ़ती है।

अभी नेट में हिन्दी इतनी व्यावसायिक नहीं हो पाई है कि हिन्दी वेबसाइट या ब्लॉग से कमाई हो सके। इसका मुख्य कारण हिन्दी के पाठकों की संख्या का अंग्रेज़ी के मुकाबले कम होना ही है। वर्तमान हिन्दी ब्लोगिंग को देखते हुए ऐसा लग रहा है कि निकट भविष्य में कंप्युटर पर हिंदी के प्रयोगकर्ता और ब्लॉगर्स की संख्या निश्चित तौर पर बढेगी और साथ ही इन माध्यमों से रोज़गार के मार्ग भी खुलेंगें ।

हिन्दी चिट्ठाजगत समुदाय

शुरुआती समय में हिन्दी चिट्ठाकारों की कम सँख्या को देखते हुए आरम्भिक चिट्ठाकारों ने इस माध्यम के प्रचार के लिये अनेक समुदाय बनाए ताकि हिन्दी चिट्ठाकारी का प्रचार किया जा सके। कुछ प्रमुख समुदाय निम्न हैं:–

चिट्ठाकार डाक सूची – चिट्ठाकारों का गूगल समुदाय
ऑर्कुट पर हिन्दी चिट्ठाकार समूह
पेंचकस डाक सूची हिन्दी प्रोग्रामरों एवं डेवलपरों का गूगल समुदाय
फ्लिकर पर हिन्दी चिट्ठाकारों का समूह
यट्यूब पर हिन्दी चिट्ठाकार समूह
हिन्दी चिट्ठाकारों का फ्रॅपर मॅप
हिन्दी चिट्ठाकारों की वेबरिंग
हिन्दी ब्लॉगर सूची

फीड आधारित ब्लॉग एग्रीगेटर

चिट्ठा विश्व – हिन्दी का पहला ब्लॉग एग्रीगेटर:
चिट्ठा–विश्व के बारे में विस्तृत जानकारी
नारद – नारद के बारे में विस्तृत जानकारी
हिन्दीब्लॉग्स.कॉम – हिन्दीब्लॉग्स.कॉम के बारे में विस्तृत जानकारी
चिट्ठाजगत.इन
ब्लॉगवाणी
हिन्दी चिट्ठे एवं पॉडकास्ट
टेक्नोराती फेवरिट्स – इंडीब्लॉगर
याहू पर हिन्दी चिट्ठे (नारद की फीड से दिखाये जाते हैं)

इंडीयास्फीयर हिन्दी खंड
हिन्दी ब्लॉग्स

अपना ब्लॉग कैसे शुरु करें?

ब्लॉग लिखने के लिये सबसे अच्छी चीज यह है कि इसके लिये आपको खास तकनीकी ज्ञान की जरूरत नही है और ना ही किसी तरह के पैसा खर्च करने की। बस जरूरत है तो इच्छा शक्ति की, विचारों के प्रवाह की और थोड़े से समय की। ज्यादातर लोग आपसे कहेंगे कि शुरुआती ब्लॉगर के लिये ब्लॉग लिखने के लिये सबसे सुगम और सरल साधन ब्लॉगर ही है। बस अपना अकाउंट बनाइये और शुरु हो जाइये किसी समस्या के आने पर आपके अनेक मददगार मौजूद है परिचर्चा तथा चिट्ठाकार गूगल समूह में, जिनके आप तुरत फुरत सदस्य बन सकते हैं, आवेदन करने भर की देर है।

ब्लॉग शुरू करने के लिए जरूरी सामान

हमारा परामर्श है कि अपना ब्लॉग आप यूनिकोड हिन्दी का ही प्रयोग करें। यूनिकोड के प्रयोग से न केवल आपका ब्लॉग फॉन्ट के उपर निर्भरता से दूर होता है बल्कि गूगल जैसे खोज इंजनों से आपके ब्लॉग की सामग्री भी आसानी से खोजी जा सकती है। फॉन्ट के उपर निर्भरता दूर होने का कारण यह है कि आपके पाठक के कंप्यूटर पर बस एक अदद यूनिकोड फॉन्ट की दरकार होती है, यह नहीं कि हर जालस्थल को पढ़ने के लिये अलग अलग फॉन्ट डाउनलोड करना पड़े। आजकल कई बेहतरीन यूनिकोड हिन्दी फॉन्ट उपलब्ध हैं, अगर आप विंडोज एक्सपी पर हैं तो कोई दिक्कत ही नहीं, क्योंकि यह मंगल नामक यूनिकोड हिन्दी फॉन्ट से लैस होता है। तो मुद्दे की बात यह है कि आपकी मशीन पर कम से कम एक यूनिकोड हिन्दी फॉन्ट होना चाहिए। बेहतर हो कि आप के पास हो विंडोज एक्सपी या नवीनतम लिनक्स तथा ब्राउज़र हो इंटरनेट एक्सप्लोरर 6। अधिक और सटीक जानकारी के लिये आप देवनागरी डॉट नेट पर अवश्य जायें। एक बार यूनिकोड हिन्दी के लिए मशीन सेटअप हो जाने के उपरांत तो ब्लॉग लिखना ईमेल लिखने जितना ही आसान है।

ब्लॉग पर हिन्दी में कैसे लिखें

यूनिकोड हिन्दी तथा फोनेटिक टूल्स के आगमन से हिन्दी में टाइप करना अत्यंत सरल हो गया है। । बारहा, हिंदी कैफ़े, हिंदी पैड़ जैसे साफ्ट्वेयर चलाकर आप आसानी से हिंदी लिख सकते हैं । इन टूल्स से आप ब्लॉग में भी लिख सकते हैं और अन्य साथियों के ब्लॉग पर कमेंट भी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त ब्लॉगर ने हाल ही में अपने पोस्ट एडीटर में ट्रांसलिटरेशन टूल भी उपलब्ध कराया है जिससे कि आप बिना किसी अन्य टूल की सहायता से भी हिन्दी में ब्लॉग लिख सकते हैं।

हिंदी अधिकारी
राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान
दोना पावला, गोवा
ई–मेल: srakesh@nio.org

भाषा का महत्व

एल एल बी' की एक कक्षा में एक प्रोफेसर ने अपने एक योग्य छात्र से पूछा 'अगर तुम्हें किसी को एक सन्तरा देना हो तो तुम क्या करोगे।

छात्र ने जवाब दिया 'यह सन्तरा लो।

प्रोफेसर थोड़ा नाराज़ सा हुआ। 'नहीं नहीं, एक वकील की तरह सोचो।

तब छात्र ने जवाब दिया 'ठीक है मैं कहूंगा 'मैं एतद् द्वारा अपनी पूरी रूचि और बिना किसी के दबाव में यह फल जो सन्तरा कहलाता है उसके छिलके रस गूदे ओर बीज समेत देता हूं और साथ ही इस बात का सम्पूर्ण अधिकार भी कि इसे लेने वाला इसे काटने छीलने फ्रिज में रखने या खाने के लिए पूरी तरह अधिकृत होगा और यह भी अधिकार रखेगा कि इसे वो दूसरे व्यक्ति को छिलके रस गूदे और बीज के बिना या उनके साथ दे सकता है। और इसके बाद मेरा किसी भी प्रकार से इस सन्तरे से किसी भी प्रकार का विधिक या नैतिक संबंध नहीं रह जायेगा।